ISSN 0974 1666

सी.सी.आर.यू.एम

न्यूज़लेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद की द्वैमासिक पत्रिका

खंड 35 • अंक 1 जनवरी–फरवरी 2015

प्रो. रईस-उर-रहमान के.यू.चि.अ.प. के नए महानिदेशक

प्रो. रईस–उर–रहमान, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने दिनांक 31 जनवरी 2015 को केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) के नए महानिदेशक के रूप में अतिरिक्त पदभार संभाला। वह परिषद में चार साल से अधिक अपनी सेवायें देने वाले प्रो. शाकिर जमील की सेवा–निवृत्ति के पश्चात् प्रतिस्थापक के तौर पर आए हैं। प्रो. रईस–उर–रहमान एक प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक हैं और उन्हें तीन दशकों का शिक्षण और प्रशासन का अनुभव है।

प्रो. रईस–उर–रहमान यूनानी चिकित्सा के वैश्वीकरण पर एक व्यापक दृष्टि रखते हैं। 02 फरवरी को परिषद के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ अपने प्रथम विचार–विमर्श में उन्होनें कहा कि हमारा लक्ष्य अगले पांच वर्षों में यूनानी चिकित्सा पद्धति को एक सम्मानजनक ऊचांई पर ले जाना होना चाहिए। प्रो. रईस–उर–रहमान के.यू.चि.अ.प. के अनुसंधान कार्यक्रमों और समग्र कामकाज से भलीभांति परिचित हैं। उनका के.यू.चि. अ.प. के साथ काफी लम्बे समय से संबंध रहा है और वह विभिन्न हैसियत से इसकी अनुसंधानिक गतिविधियों से जुड़े रहे हैं। वह परिषद् की स्थायी वित्तीय समिति (एस.एफ.सी.) और वैज्ञानिक सलाहाकार समिति (एस.ए.सी.) के सदस्य रहे है।

आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बिया कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर प्रो. रईस–उर–रहमान ने 2006 से 2013 तक इसी कॉलेज में मुआलजात व इल्मुल अमराज़ (मेडिसन एण्ड पैथोलोजी) विभागाध्यक्ष के रूप में सेवाएं प्रदान की हैं। इसके बाद, वह 15 फरवरी 2013 को आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार में सलाहकार (यूनानी) के पद पर नियुक्त हुए।

प्रो. रईस–उर–रहमान

प्रो. रईस–उर–रहमान फरवरी 1988 में हमदर्द तिब्बी कॉलेज, नई दिल्ली में निदर्शक (मुआलजात) के रूप में नियुक्त हुए। इसके बाद मई 1988 में उनकी नियुक्ति आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली के मुआलजात–व–इल्मुल अमराज़ विभाग में इस पद पर हुई। 1992 में वह व्याख्याता और 1996 में रीडर के पद पर प्रोन्नत हुए। 2011 में वह प्रोफेसर बने। प्रो. रहमान ने आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बिया कॉलेज अस्पताल, नई दिल्ली में 1998 से 2002 तक सहायक चिकित्सा अधीक्षक और 1996 से 1998 तक उप चिकित्सा अधीक्षक के रूप में कार्य किया।

प्रो. रईस–उर–रहमान यूनानी चिकित्सा पद्धति के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की पाठ्य व चयन समितियों में सम्मिलित रहे हैं। इसके अतिरिक्त वह जम्मु–कश्मीर एवं उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की कर्मचारी चयन समिति में भी शामिल रहे हैं।

प्रो. रईस–उर–रहमान ने यूनानी चिकित्सा और अन्य स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सम्मेलनों में शोध पत्र प्रस्तुत किए, व्याख्यान दिये और तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता की। उन्होनें पांच एम.डी. (यूनानी) शोध–प्रबंध का पर्यवेक्षण किया और उनके अनेक शोध पत्र प्रकाशित हुए। वह विभिन्न मीडिया चैनलों की विशेषज्ञ समितियों में शामिल होने के अलावा यूनानी चिकित्सा

पद्धति की कई अनुसंधान पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड में भी सम्मिलित हैं।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद अपने नए महानिदेशक के रूप में प्रो. रईस–उर–रहमान का स्वागत करती है और उनके सक्रिय नेतृत्व में यूनानी चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान के क्षेत्र में तीव्र एवं चौतरफ़ा विकास और प्रगति को देखने की उत्सुक है। • *नियाज़*

माघ मेला 2015 में स्वास्थ्य शिविर

परिषद के अधीन इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र ने 10 जनवरी से 17 फरवरी तक संगम, इलाहाबाद में माघ मेला 2015 के तीर्थ यात्रियों के लिए एक व्यापक स्वास्थ्य शिविर–सह–प्रदर्शनी का आयोजन किया।

डॉ. जुबैर अहमद खान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, इलाहाबाद माघ मेला 2015 में आयोजित स्वास्थ्य शिविर के दौरान एक मरीज़ को देखेते हुए।

शिविर का आयोजन सतत् विकास और गरीबी उन्मूलन हेतु कार्य कर रही संस्था उत्थान केन्द्र के सहयोग से किया गया। मेले का उद्घाटन डॉ दीना नाथ तिवारी, पूर्व उप–प्रधान, योजना आयोग, छत्तीसगढ़ ने किया। उद्घाटन समारोह के दौरान डॉ. मोहम्मद अहमद, उप–अधीक्षक, राज्य यूनानी मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद, यूनानी पद्धति से जुड़े गणमान्य व्यक्ति और साधू–संत उपस्थित थे।

शिविर में उपचार हेतु नियुक्त चिकित्सकों ने 4,853 रोगियों का उपचार किया। कई सामान्य और जटिल रोगों पर विशेष व्याख्यान का आयोजन भी हुआ, इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य में वृद्धि और रोगों के रोकथाम में यूनानी चिकित्सा के योगदान पर निःशुल्क साहित्य वितरण किया गया। परिषद की अनुसंधानात्मक गतिविधियों और उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला गया।

• *ज़की*

एन.ए.सी.एल.आई.एन. 2014 में सहभागिता

परिषद के पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र के कर्मचारियों ने 9–11 दिसम्बर 2014 को पॉन्डीचेरी में ज्ञान, पुस्तकालय और सूचना तंत्र पर आधारित 17वें राष्ट्रीय सम्मेलन एन.ए.सी.एल.आई.एन. 2014 में भाग लिया। इस सम्मेलन का आयोजन डेवेलेपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (डी.ई.एल.एन.ई.टी.), नई दिल्ली और फ्रेन्च इन्स्टीट्यूट ऑफ पॉन्डीचेरी, पॉन्डीचेरी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान कहा कि ''अच्छी पुस्तकें कल्पनाओं को ज्वलंत करती हैं, कल्पनाएं रचनात्मकता की ओर ले जाती हैं, रचनात्मकता विचारधारा का विस्तार करती है, विचारधारा ज्ञान प्रदान करती है और ज्ञान हमें महान बनाता है''। उन्होनें अच्छी पुस्तकों के सम्पर्क में आने और उससे प्राप्त जीवन के वास्तविक चिरस्थायी संवर्धन से युक्त होने पर ज़ोर दिया। उन्होनें पुस्तकालयों को सक्रिय–वाणी सामर्थ्य से जोड़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला ताकि नेत्रहीन भी इसका लाभ उठा सकें। उन्होनें कहा कि प्रत्येक घर में एक पुस्तकालय होना चाहिए क्योंकि गृह पुस्तकालय अन्य सम्पत्तियों से महान होता है।

इससे पहले डॉ. एच. के. कोल, निदेशक, डी.ई.एल.एन.ई.टी, नई दिल्ली ने अपने परिचय सम्बोधन में कहा कि दुनिया भर के पुस्तकालयों को उत्कृष्ट सम्भावित ढंग से अपने उपयोगकर्त्ताओं की सेवा करने के लिए इस युग में अनेक परिवर्तनों से गुज़रना पड़ा है।

यह तीन दिवसीय सम्मेलन ''फ्राम बिल्डिंग कलेक्शन्स टू मेकिंग कनेक्शन्सः ट्रांसफोर्मिंग लाइब्रेरीज़ इन द नॉलेज एरा'' विषय पर आधारित था जिसमें आठ तकनीकी सत्र, पोस्टर प्रस्तुतिकरण, आंमत्रित विचार–विमर्श, उत्पाद प्रस्तुतिकरण, पैनल चर्चा आदि सम्मिलित थे। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद मुख्यालय से पुस्तकालय एवं सूचना सहायक श्री सैय्यद शुऐब अहमद और श्री मसूद–उज़–ज़फर इस कार्यक्रम में सम्मिलत हुए।

• *रिपोर्टः नियाज़ । इनपुटः शुऐब*

गैर-संक्रामक रोगों को नियंत्रित करने के लिए आयुष प्रणाली के उपयोग की आवश्यकता पर बल

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) ने 14–15 जनवरी 2015 को इण्डिया इस्लामिक कल्चरल सेन्टर, नई दिल्ली में गैर–संक्रामक रोगों पर यूनानी चिकित्सा की भूमिका पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में गैर–संक्रामक रोगों के नियन्त्रण और उपचार हेतु आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) उपचार प्रणालियों के उपयोग की सामर्थयता और आवश्यकता पर बल दिया गया।

संगोष्ठी में शुभारंभ और समापन सत्र के अतिरिक्त, एक विस्तृत सत्र और 10 विशिष्ट विषयों पर एक–एक तकनीकी सत्र रखे गए थे। कुल 58 शोध पत्र और 11 आंमत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। चिकित्सीय वैज्ञानिक, शिक्षाविदों, अनुसंधानकर्त्ताओं और एम.डी. (यूनानी) विद्वानों सहित कुल 300 प्रतिनिधियों के लिए यह संगोष्ठी एक व्यापक मंच साबित हुई। इस अवसर पर परिषद के पांच महत्वपूर्ण प्रकाशनों का विमोचन किया गया।

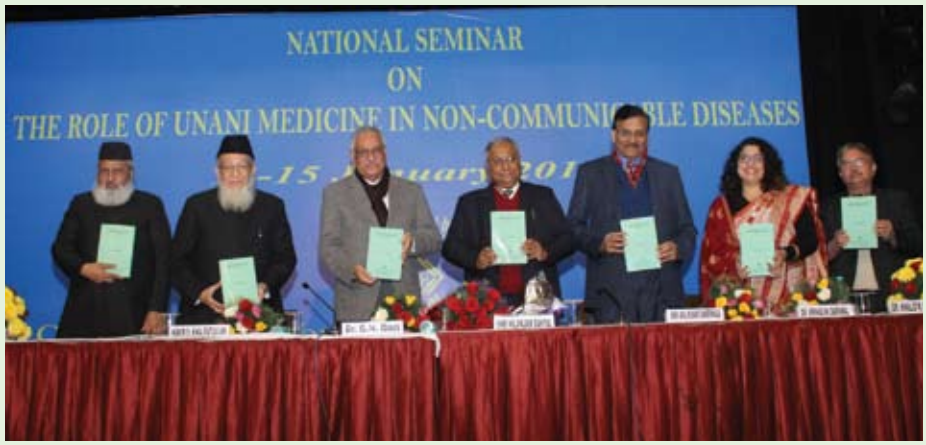

श्री निलंजन सान्याल (बीच में) एवं श्री ए.के. गनेरीवाला (उनके बायें) –सचिव और संयुक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार–(बायें से दायें) प्रो. एस. शाकिर जमील, महानिदेशक के.यू.चि.अ.प.; हकीम सैय्यद ख़लीफातुल्लाह, उपाध्यक्ष, शासी निकाय, के.यू.चि.अ.प.; डॉ जी.एन. क़ाज़ी, कुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली; डॉ. मृनालिनी दरसवाल, विशेष सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, दिल्ली सरकार; और डॉ. ख़ालिद एम. सिद्दीकी, उप महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. के साथ 14 जनवरी को नई दिल्ली में गैर–संक्रामक रोगों में यूनानी चिकित्सा की भूमिका पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान के.यू.चि.अ.प. के एक प्रकाशन का विमोचन करते हुए।

उद्घाटन समारोह

संगोष्ठी का उद्घाटन श्री निलंजन सान्याल, सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री सान्याल ने कहा कि मधुमेह, कैंसर और हृदय संबंधी रोग जैसे मर्त्यता, गैर सक्रांमक रोग और अस्वस्थता के प्रमुख वैश्विक कारण हैं। आयुष प्रणाली रोगों के नियंत्रण और उपचार में योगदान हेतु पूर्णतयाः सक्षम है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने सामर्थ्य को स्थापित कर सकती है। उन्होनें नैदानिक अध्ययनों में सार्वभौमिक वैज्ञानिक मापदण्डों को अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया ताकि हमारी चिकित्सा पद्धतियां उचित मान्यता प्राप्त कर सकें।

श्री सान्याल ने भेषजकोशीय औषधियों के साथ–साथ पारम्परिक तकनीकों के वैधीकरण अध्ययनों के परिमाण और गति वृद्धि पर बल दिया। उन्होनें पेटेंटेड और प्रभावकारी औषधियों के व्यवसायीकरण पर भी ज़ोर दिया।

श्री सान्याल ने आगे कहा कि भारत सरकार आयुष पद्धतियों के चहुमंखी विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रही है और आयुष विभाग को मंत्रालय का दर्ज़ा प्रदान किया गया है। उन्होनें बताया कि सरकार ने किफायती स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा प्रणाली को मज़बूत बनाने, गुणवत्ता नियंत्रण के प्रवर्तन की सुविधा और औषधियों की दीर्घकालिक उपलब्धता को सुनिश्चित करते हुए इन पद्धतियों के प्रोत्साहन हेतु एक राष्ट्रीय आयुष मिशन की शुरूआत की गई है।

इस अवसर पर, डॉ. जी.एन. क़ाज़ी, कुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली जोकि संगोष्ठी के सम्मानीय अतिथि थे, ने कहा कि यूनानी चिकित्सा के वैज्ञानिक

वैधीकरण की गति में तेजी लाई जानी चाहिए और इसके शोध परिमाण में वृद्धि होनी चाहिए। उन्होनें यूनानी चिकित्सा पद्धति के अनुसंधानकर्त्ताओं से अपनी पद्धति के विभिन्न समृद्ध क्षेत्रों और गैर–संक्रामक रोगों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक औषधियों के उपयोग के वैज्ञानिक वैधीकरण पर ज़ोर दिया।

डॉ. मृनालिनी दरसवाल (आई.ए.एस.), विशेष सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार ने कहा कि आयुष प्रणाली के अनुसंधानकत्ताओं को इस प्रणाली में उल्लेखित उपचारों और विभिन्न अवधारणाओं को पुनःसत्यापित करना चाहिए और उत्कर्ष शोध द्वारा अपनी पद्ध ति को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

पद्मश्री हक़ीम सैय्यद ख़लीफतुल्लाह, एक प्रख्यात यूनानी चिकित्सक और के.यू.चि.अ.प. के शासी निकाय के उपाध्यक्ष (तकनीकी) ने यूनानी चिकित्सा की महत्वत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि इस पद्धति में गैर संक्रामक रोगों के सफल उपचार के लिए अनेक प्रभावशाली दीर्घकालीन परीक्षित उपाय मौजूद हैं।

इससे पहले, अपने स्वागत सम्बोधन में प्रो. एस. शाकिर जमील, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि पिछले साढ़े तीन दशकों में परिषद ने अपने विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों में कुछ महत्वपूर्ण एतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं और यह यूनानी चिकित्सा के अग्रणी अनुसंधान संस्थान के रूप में उभरा है। परिषद ने अपने नैदानिक अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राथमिकता वाले रोगों पर विशेष ज़ोर देने के साथ–साथ गैर–संक्रामक रोगों सहित 30 रोगों पर अध्ययन किया।

श्री निलंजन सान्याल, सचिव आयुष मंत्रालय, भारत सरकार 14 जनवरी को नई दिल्ली में गैर–संक्रामक रोगों में यूनानी चिकित्सा की भूमिका पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए।

उनहोनें बताया कि परिषद ने सफ़ेद दाग़, एक्ज़िमा, सोराइसिस, चर्म रोग, दमा, साइनुसाटिस, संधिवात, आस्टियो आर्थराइटिस, इन्फ़ेक्टिव हैपेटाइटिस, मलेरिया और फाइलेरिएसिस सहित अन्य रोगों को सुरक्षित व मूल्य प्रभावी यूनानी औषधि से उपचार विकसित किया। उन्होनें बताया कि परिषद ने आठ औषधियों पर पेटेन्ट हासिल किया और 46 पेटेन्ट आवदेन पत्र दाखिल किए गए।

उन्होनें आगे कहा कि परिषद ने हाल ही में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली; राष्ट्रीय क्षय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई; कौशिकी एवं निवारक अर्बुदशास्त्र संस्थान, नोएडा; राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे; क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, पोर्ट ब्लेयर; राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद; राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और यूनानी चिकित्सीय संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए और शोध कार्यों को बढ़ावा देने हेतु इन्ट्राम्यूरल (अन्तरंग) अनुसंधान नीति को अपनाया।

बुनियादी ढांचे के विकास के संबंध में, प्रो. जमील ने सूचित किया कि परिषद ने केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भद्रक और पटना के लिए नए भवनों का निर्माण कार्य किया और क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, सिल्चर के लिए निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया गया है। परिषद ने के.यू.चि.अ.स., हैदराबाद और क्षे.यू.चि.अ.सं., श्रीनगर में अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाएं स्थापित कीं।

परिषद के पांच महत्वपूर्ण प्रकाशनों –मानक यूनानी चिकित्सा दिशा–निर्देश, खण्ड– I, किताब–उल–मिया फिल–तिब्ब भाग– I, मेडिसनल प्लांट्स इन फॉल्क लोर ऑफ ओडिशा भाग– II, मुहित–ए–आज़म खन्ड– III, और मानक यूनानी चिकित्सा शब्दावली का विमोचन क्रमशः श्री निलंजन सान्याल, डॉ. जी.एन. क़ाज़ी, श्री ए.के. गनेरीवाला, संयुक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, हक़ीम सैय्यद ख़लीफातुल्लाह और डॉ. मृनालिनी दरसवाल द्वारा किया गया।

अन्त में, डॉ. ख़ालिद एम. सिद्दीक़ी, उप–महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., नई दिल्ली ने अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

विस्तृत सत्र

14 जनवरी को शुभारम्भ सत्र के बाद गैर–संक्रामक रोगों पर नैदानिक अनुसंधान में नवीनतम प्रगति के विषय पर एक विस्तृत सत्र का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रो. वाई. के. गुप्ता, अध्यक्ष, औषध शास्त्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली और

प्रो. सुखदेव स्वामी हान्डा, पूर्व निदेशक, भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू; अध्यक्ष, भारतीय चिकित्सा भेषज आयोग ने की। इस सत्र के प्रतिवेदक डॉ. एम.एच. काज़मी, सहायक निदेशक (यूनानी) के.यू.चि.अ.प. थे।

सत्र का आरंभ डॉ. नन्दनी के. कुमार, पूर्व उप–महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पिट्स एण्ड प्रोब्लम्स इन क्लीनिकल रिसर्च इन ट्रेडिशनल सिस्टम ऑफ मेडिसन पर आमत्रिंत व्याख्यान से हुआ। उनके व्याख्यान में आधुनिक समय में पादप औषधि की सुरक्षा के बारे में बहुमूल्य जानकारी, अनुसंधानात्मक उत्पादों की औषधियों से सम्बन्धित समस्याएं एवं समाधान, कच्चे माल की उपलब्धता और औषधियों की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारक, नैदानिक अध्ययन और विभिन्न नैतिक मामलों में संवेदनशील समूह शामिल थे।

प्रतिनिधियों द्वारा गैर–संक्रामक रोगों पर हुए विभिन्न नैदानिक अध्ययन पर चार शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

तकनीकी सत्र

14 फरवरी को आयोजित चार तकनीकी सत्रों में पहला सत्र गैर–संक्रामक रोगों में इलाज–बिल–तदबीर (रेजिमेनल थैरपी) विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. ज़िल्लुर रहमान, इब्ने सिना अकादमी, अलीगढ़, डॉ. एम.ए. क़ासमी, उप–सलाहाकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, नई दिल्ली और प्रो. ताजुद्दीन, सैदला विभाग (यूनानी फार्मेसी), यूनानी चिकित्सा संकाय, अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ ने की और डॉ. मो. फाज़िल ख़ान, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प., प्रतिवेदक थे।

सत्र का आरंभ प्रो. के.एम.वाई. अमीन, इल्मुल अदविया विभाग, अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ के आमंत्रित व्याख्यान से हुआ। उन्होनें ''दि डिसटिन्कटिव यूनानी अप्रोच टू एन.सी.डीज़: इन्टरवेन्शन्स एण्ड रिसर्च इनीशिएटिवज़'' नाम शीर्षक के शोध पत्र द्वारा अपनी ज्ञान–विद्या से श्रोताओं को प्रबुद्ध किया। उन्होनें यूनानी चिकित्सा में उपचार के विकास की प्रणाली, नैदानिक परीक्षण प्रोटोकॉल के प्रारूप में यूनानी मापदंडों को शामिल किये जाने, प्रतिनियुक्त संतुलनांक के स्थान पर उपचारात्मक संतुलनांक चरणों के उपयोग को प्राथमिकता, संपूर्ण अपरिष्कृत औषधि का उपयोग और नैदानिक अध्ययन में जीवन की गुणवत्ता और मिजाज के मूल्यांकन के महत्व पर बल दिया। इस सत्र में, 6 प्रतिनिधियों ने इस विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

पहले सत्र के समानांतर दूसरा सत्र ''जीवनशैली से सम्बन्धित रोगों में यूनानी चिकित्सा की भूमिका'' विषय पर आयोजित हुआ। प्रो. एम.ए. सिद्दीक़ी, निदेशक, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बैंगलोर और डॉ. वसीम अहमद, उप–निदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने इस सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र के प्रतिवेदक डॉ. ज़की अहमद सिद्दीक़ी, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. थे।

इस सत्र में दो आमंत्रित व्याख्यान रखी गईं जो डॉ. अरूण मुखर्जी, निदेशक, उड़ान, नई दिल्ली और डॉ. अहमद कमाल, प्रमुख वैज्ञानिक, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिक़ी संस्थान, हैदराबाद द्वारा दिए गए। डॉ. मुखर्जी ने ''करेन्ट एन्ड फ़्यूचर ट्रेन्डस इन डायबिटीज़ मैलीटस'' पर अपने विचार व्यक्त किए और मधुमेह रोगियों की सामान्य समस्याओं को विस्तार से बताया और मधुमेह के अति महत्वपूर्ण कारकों पर बल दिया। डॉ. कमाल ने औषधि विकास में प्रकृति उत्पाद : पोडोफ़ाइलोटॉक्सिन क्न्जीनर्स ऐज़ पोटेंशियल कीमोथेराप्युटिक्स पर एक प्रभावशाली व्याख़्यान दिया। उन्होनें आणविक स्तर तक परिवर्तन की संकल्पना के साथ प्राकृतिक उत्पादों विशेषकर औषधीय पादपों से नईं औषधियों के विकास और खोज को विस्तार से बताया। सत्र में इस विषय पर चार शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

इस दिन दो अन्य सामानांतर सत्र गैर संक्रामक रोगों में प्रयुक्त चिकित्सीय पादपों के अन्वेषण और मानकीकरण के विषय पर आयोजित किए गए। इनमें से एक सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनीस अहमद अन्सारी, अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ और हक़ीम एल. समीउल्लाह, निदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने की। इस सत्र के प्रतिवेदक श्री अमीनुद्दीन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति), के.यू.चि.अ.प. थे। अन्य सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजीव शर्मा, निदेशक और डॉ. एम.बी. शंकर, संयुक्त निदेशक, फार्माकोपियल लेबोरेटरी फॉर इण्डियन मेडिसन एण्ड होम्योपैथी, ग़ाज़ियाबाद ने की। श्री शमसुल आरफ़ीन, अनुसंधान अधिकारी (रसायन), के.यू.चि.अ.प. इस सत्र क प्रतिवेदक थे।

इन सत्रों में से एक में प्रो. अब्दुल मन्नान, इल्मुल अदविया विभाग, अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ ने ''माइग्रेन के यूनानी परिप्रेक्ष्य'' पर आंमत्रित व्याख्यान दिया। उन्होनें यूनानी चिकित्सा साहित्य के अनुसार रोग–कारक, पूर्व प्रवृत्त कारक, नैदानिक परिणाम और शक़ीक़ा (माइग्रेन) के उपचार का सविस्तार वर्णन किया।

उन्होनें शक़ीक़ा (माइग्रेन) के उपचार और रोकथाम के लिए असबाब सित्ता ज़रूरिया (छः आवश्यक कारक) और इलाज बिल ग़िज़ा के नियमन पर भी प्रकाश डाला। इन दो सत्रों में कुल 11 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। सत्र का समापन करते हुए डॉ. राजीव शर्मा ने सदन को भारतीय चिकित्सा पद्धति में भेषजकोशीय मोनोग्राफों में गुणवत्ता मानकों के महत्व एवं आवश्यकता के बारे में बताया।

अगले दिन की कार्यवाही दो समानतंर सत्रों के साथ ''गैर सक्रांमक रोगो पर प्रयोगात्मक अध्ययन और हृदयवाहिनी रोगों में यूनानी चिकित्सा की उपयोगिता'' विषय से आरंभ हुई। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. नन्दिनी के. कुमार और डॉ. आसिम अली ख़ान, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, चिकित्सा संकाय (यूनानी), जामिया हमदर्द, नई दिल्ली द्वारा की गई और इस सत्र के प्रतिवेदक डॉ. मिस्बाहुद्दीन अज़हर, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. थे। प्रो. एम.ए. सिद्दीक़ी, निदेशक, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बैंगलुरू के आमंत्रित व्याख्यान कैंसर–ए रिविज़िट टू दि विस्डम ऑफ़ यूनानी सिस्टम ऑफ़ मैडिसिन से इसका प्रारंभ हुआ। उन्होनें कैंसर से सम्बन्धित प्राचीन यूनानी विशेषज्ञों की संकल्पनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होनें बुक़रात का हवाला देते हुए बताया कि कैंसर अख़लात और सौदा (काला पित्त) के असंतुलन से पैदा होता है और जालीनूस ने सर्वप्रथम सर्वव्यापी तरीक़े से कैंसर सहित शरीर की गांठों का उपचार किया। उन्होनें कैंसर पर हिप्पोक्रेट की परिभाषा को विस्तृत किया और इसे तीन प्रमुख प्रकारों – ओनकोई (अपवृद्धि), करकीनोमस (अवर्णित), और कारकीनोस (विषालु वर्ण) में वर्गीकृत किया। इस वार्ता के अतिरिक्त, इस सत्र में पांच पत्र प्रस्तुत किए गए।

अन्य सत्र की अध्यक्षता डॉ. के.एम. वाई. अमीन ने की और इस सत्र के प्रतिवेदक डॉ. क़मरूद्दीन, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. रहे। इस सत्र में प्रो. अरूनाभा रे, अध्यक्ष, फार्माकोलॉजी विभाग, वल्लभ भाई पटेल चेस्ट संस्थान, चिकित्सा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने आमंत्रित व्याख्यान में ब्रांकियल अस्थमा (दमा) में यूनिम–352 के नैदानिक और प्रयोगात्मक अध्ययन पर विचार व्यक्त किए। उन्होनें कहा कि यूनिम–352 – एक बहुपादपीय यूनानी मिश्रण का यादृच्छिक, डबल ब्लाइन्ड, नियंत्रित प्रायोगिक, नैदानिक अध्ययन ब्रांकियल अस्थमा (दमा) के रोगियों में संभावित लाभदायक प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए किया गया और यह निष्कर्ष निकला कि यह औषधि ब्रोकियल अस्थमा (दमा) की आवृति को कम करने में प्रभावशाली और सुरक्षित है। इस सत्र में इस विषय पर चार पत्र प्रस्तुत किये गए।

गैर संक्रामक रोगों में नवीन औषध विकास, यूनानी चिकित्सा और कर्करोग विज्ञान पर सातवां और आठवां सत्र 15 जनवरी अपराह्न 12.00 आरंभ हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एम.एम. वामिक़ अमीन, अध्यक्ष, इल्मुल अमराज़ विभाग, यूनानी चिकित्सा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्विद्यालय, अलीगढ़ और प्रो. मोहम्मद इदरीस, अध्यक्ष, इल्मुल सैदला, आयुर्वेदिक एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली ने की। इस सत्र के प्रतिवेदक डॉ. बिलाल अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), साहित्यिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली थे। सत्र का प्रारंभ डॉ. मुश्ताक़ अहमद, अध्यक्ष, यूनानी मैडिसिन

नई दिल्ली स्थित इण्डिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर में 14–15 जनवरी को केंन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा गैर–संक्रामक रोगों में यूनानी चिकित्सा की भूमिका पर आयोजित दो–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में श्रोतागण के दो विभिन्न दृश्य।

चेयर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न केपे, साउथ अफ्रीका के आंमत्रित व्याख्यान से हुआ। उन्होंने वजा–उल–मफासिल के विषय में यूनानी सिद्धांत व उपचार पर अपने विचार व्यक्त किए।

आठवें सत्र की अध्यक्षता एम.आई.जी. तिब्बिया कॉलेज एवं डॉ. ए.आर. कालसेकर अस्पताल, मुम्बई के कुल्लियात विभाग के पूर्व प्रधानाचार्य व अध्यक्ष प्रो. (हक़ीम) बी.एस. उस्मानी ने की और डॉ. अहमद सईद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के.यू.चि.अ.प. इस सत्र के प्रतिवेदक थे। सत्र का प्रारम्भ डॉ. एम.ए. वहीद, उप–निदेशक, के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के आमंत्रित व्याख्यान से हुआ। उन्होनें ''इमरजिंग ट्रेन्डस इन दि मैनेजमेन्ट ऑफ़ मैटाबॉलिक सिन्ड्रॉम'' पर अपने विचारों को केन्द्रित किया। उन्होनें डायबिटीज़ रोग की जटिलताओं और अनियन्त्रित डायबिटीज़ मैलाइट्स के निष्कर्षों पर प्रभाव डाला। उन्होनें उपापचयी संलक्षण के रोगात्मक कारण, नैदानिक मापदण्ड और मूल्यांकन पर ज़ोर दिया। उन्होनें उपापचयी संलक्षण के विषय में मोटापा, वसा, प्रवाहक जैव चिन्ह् और मुक्त मूलक की भूमिका को भी निर्देशित किया। इस सत्र में कुल 6 पेपर इस विषय पर प्रस्तुत किए गए।

संगोष्ठी के अन्तिम दो समानान्तर सत्र ''यूनानी चिकित्सा एवं त्वचा विज्ञान'' और ''असंक्रामक रोग प्राचीन साहित्य की दृष्टि से'' विषय पर आधारित थे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. नीना खन्ना, त्वचा रोग विभाग, एम्स, नई दिल्ली और डॉ. अब्दुल वदूद ख़ान, आयुर्वेदिक एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली द्वारा की गई और इस के प्रतिवेदक डॉ. मेराज–उल–हक़, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के.यू.चि.अ.प. थे। डॉ. नीना खन्ना ने ''मध्यम से प्रचंड सोराइसिस के उपचार

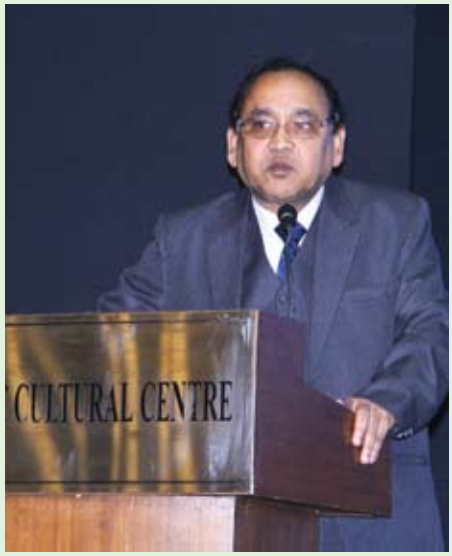

प्रो. रईस–उर–रहमान, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार 15 जनवरी को नई दिल्ली में गैर–संक्रामक रोगों में यूनानी चिकित्सा की भूमिका पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए।

में कोडित यूनानी औषधियों और पी.यू.वी.ए. विलयन का तुल्नात्मक अध्ययन'' पर एक आमंत्रित व्याख्यान दिया जिसमें यूनानी औषधियों के प्रभाव को विस्तार से वर्णित किया गया। उनके प्रस्तुतीकरण के अनुसार यूनानी औषधियां सार्थक रूप से प्रभावी और सुरक्षित पाई गईं। इस सत्र में कुल 6 पेपर इस विषय पर प्रस्तुत किए गए।

दसवें एवं अन्तिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. ख़ालिद ज़मां ख़ान, कुल्लियात विभाग, यूनानी संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय, अलीगढ़ द्वारा की गई और इस सत्र के प्रतिवेदक डॉ. अमानुल्लाह, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. थे। इस सत्र का आंरभ डॉ. शारिक़ अली ख़ान, प्रभारी अनुसंधान अधिकारी, क्षे.यू.चि.अ.स., अलीगढ़ के आमंत्रित व्याख्यान द्वारा हुआ। उन्होनें ''यूनानी चिकित्सा में ज़ियाबितस सुक्करी (डायबिटीज़ मैलीटस टाइप ।।) का उपचार–परम्परागत पद्धतियों पर श्रेष्ठता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होनें डायबिटीज़ मैलीटस के उपचार में विभिन्न यूनानी एकल औषधियों की उपयोगिता के बारे में बताया। इस सत्र में कुल 6 पेपर प्रस्तुत किए गए।

समापन सत्र

प्रो. वाई.के. गुप्ता., अध्यक्ष, औषध विज्ञान एम्स, नई दिल्ली ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. रईस–उर–रहमान, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली थे।

सत्र का प्रारंभ प्रो. सैय्यद शाकिर जमील, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., नई दिल्ली द्वारा कार्य–विवरण के सारांश द्वारा हुआ। उन्होनें उद्घाटन सत्र के विवरण के साथ–साथ तकनीकी सत्रों के प्रस्तुतीकरण का सारांश प्रस्तुत किया।

अपने समापन उद्घोष में प्रो. वाई. के. गुप्ता ने इस बात पर बल दिया कि हमें यूनानी चिकित्सा पद्धति की क्षमता को पहचान कर अनुसंधान हेतु रोगों की प्राथमिकता सुनिश्चित करनी चाहिए। उन्होनें शोध पत्रों के प्रकाशन पर भी ज़ोर दिया।

प्रो. रईस–उर–रहमान ने अपने गौरवपूर्ण भाषण में संगोष्ठी को एक बड़ी क़ामयाबी बताया। उन्होंने संगोष्ठी के चयनित विषय के लिए आयोजकों को शुभकामनाएं दीं।

सत्र का समापन डॉ. एम.ए. वहीद, उप–निदेशक (यूनानी), के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद द्वारा आभार व्यक्त करने के साथ हुआ।

• *रिपोर्टः नियाज़*
इनपुटः क़मरुद्दीन

प्रो. अनीस अहमद अंसारी को सम्मान

प्रो. अनीस अहमद अंसारी को 27–28 नवम्बर 2014 को अलीगढ़ में यूनानी चिकित्सा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा आयोजित यूनानी चिकित्सा में अध्ययनों की आधुनिक विधियों के औचित्य पर आधारित दूसरे राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रो. उनीस अहमद अंसारी, (दाएं से बांए) प्रो. के. सी. सिंघल, कुलपति, एन.आई.एम.एस. विश्वविद्यालय, जयपुर और डॉ. फिरदौस अहमद वानी, रजिस्ट्रार, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली से 27–28 नवम्बर 2014 को अलीगढ़ में आयोजित यूनानी चिकित्सा में अध्ययनों की आधुनिक विधियों के औचित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार स्वीकार करते हुए, जबकि डॉ. अब्दुल–लतीफ, ए.एम.यू. अलीगढ़ खड़े होकर उनकी सराहना करते हुए।

प्रो. अंसारी एक प्रसिद्ध यूनानी विद्वान हैं और यूनानी जगत में उन्हें एक आदर्श माना जाता है। 31 मई 2013 को कुल्लियात विभाग, अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से प्रोफ़ेसर के पद से सेवानिवृति से पहले वह तीन बार, तीन साल की प्रत्येक अवधि के लिए अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज के कुल्लियात विभाग (यूनानी चिकित्सा पद्धति के मूल सिद्धांत) के अध्यक्ष, दो साल के लिए यूनानी चिकित्सा संकाय, अलीगढ़ के डीन और अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज के प्रधानाचार्य तथा चार साल से अधिक अजमल ख़ान तिब्बिया कॉलेज अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक रहे हैं। प्रो. अंसारी अगस्त 2002 से अक्टूबर 2003 की अवधि के दौरान केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद के प्रभारी निदेशक और दिसम्बर 2001 से नबम्बर 2006 तक आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सलाहकार रहे हैं।

प्रो. अंसारी को यह पुरस्कार यूनानी चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान, विकास और शिक्षा की उन्नति में उनके व्यापक योगदान के लिए दिया गया।

• *नियाज़*

क्षे.यू.चि.अ.सं., मुम्बई में हिन्दी कार्यशाला

परिषद के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान मुम्बई में 28 जनवरी को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान के कर्मचारियों को कम्पयूट्र प्रयोग का प्रशिक्षण देना था।

कार्यशाला का उद्घाटन ग्रान्ट मेडिकल कॉलेज और सर जेजे ग्रुप अस्पताल, मुम्बई के डीन पदम श्री श्री टी.पी. लहाने द्वारा किया गया।

इस अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक श्री दामोदर गौड़ ने हिन्दी भाषा में वर्तनी उच्चारण और मानकीकरण के विषयों को उजागर किया। उन्होंने श्याम पट्ट पर हिन्दी शब्दों के सही उच्चारण को समझाया।

राजभाषा विभाग, जनरल पोस्ट ऑफिस, मुम्बई के सहायक निदेशक श्री वीरभद्र सोनी ने हिन्दी भाषा हेतु कम्पयुटर के प्रयोग से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं और कम्पयूटर पर हिन्दी टाइपिंग में आने वाली सामान्य कठिनाइयों के हल के विषय में बताया। उन्होंने सभी कम्पयूटर पर यूनिकोड सॉफ्टवेयर का प्रतिष्ठापन कर हिन्दी टाइपिंग की विद्या के बारे में कर्मचारियों को बताया।

कार्यशाला का समापन संस्थान के प्रचारी ग्रुप–निदेशक डॉ मौ. रज़ा के आभार प्रकट करने से हुआ। संस्थान के सभी अधिकारियों एवं स्टाफ़ ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

• *रिपोर्ट: नियाज़*
इनपुट: क्षे.यू.चि.अ.पर., मुम्बई

आरोग्य मेलों में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) ने हाल ही में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के आठ आरोग्य मेलों में भाग लिया। इन आरोग्य मेलों का आयोजन आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के सहयोग से 12–14 दिसम्बर, 2014, 2–4 जनवरी, 7–13 जनवरी, 30 जनवरी – 2 फरवरी, 6–9 फरवरी, 13–16 फरवरी, 20–23 फरवरी और 22–25 फरवरी 2015 को क्रमशः फरीदकोट (पंजाब), ज़ीरा (पंजाब), गांधीनगर (गुजरात), गुवाहाटी (असम), रायपुर (छत्तीसगढ़), जयपुर (राजस्थान), पंचकुला (हरियाणा) और भुवनेश्वर (आडिशा) में किया गया।

श्री नवीन पटनायक, मुख्यमंत्री, उड़ीसा (बाएं) और श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), भारत सरकार 22–25 फरवरी को भुवनेश्वर में आयोजित आरोग्य मेले का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए।

इन मेलों का आयोजन भारतीय चिकित्सा पद्धति का प्रचार–प्रसार करने, अनुसंधान के क्षेत्र में आयुष के अन्तर्गत कार्य कर रही परिषदों की गतिविधियों और उपलब्धियों पर प्रकाश डालने, रोगी आंगतुकों को निःशुल्क निदान और उपचार प्रदान करने और स्वास्थ्य, स्वच्छता, अस्वस्थता के उपचारात्मक पहलुओं के बारे में जागरूकता प्रदान करने हेतु किया गया। आरोग्य मेलों ने अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधानकर्ताओं, निर्माताओं, संसाधित्रों और समाज के सभी वर्गों के लोग जो आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होमियोपैथी (आयुष) प्रणाली के पारंपरिक ज्ञान में गहरी रूचि रखते हैं, को आकर्षित किया।

इन आरोग्य मेलों के दौरान, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने अपने अनुसंधान कार्यक्रमों अर्थात् नैदानिक अनुसंधान, औषधि मानकीकरण, औषधीय पादपों के सर्वेक्षण और संवर्धन में हुई प्रगति को प्रदर्शित किया। परिषद ने यूनानी चिकित्सा पद्धति की विभिन्न संकल्पनाओं को उजागर करने वाले पोस्टरों और मानचित्रों का भी प्रदर्शन किया। इसके अतिरिक्त, परिषद के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन जैसे– फ़ार्माकोपिया ऑफ़ यूनानी मैडिसिन, नेश्नल फ़ॉर्मुलरी ऑफ़ यूनानी मैडिसिन, हिप्पोक्रेटिक जरनल ऑफ यूनानी मैडिसिन, स्टैन्डर्ड यूनानी मैडिकल टर्मिनोलॉजी ओर स्टैन्डर्ड यूनानी ट्रीटमेन्ट गाइडलाइन्स को भी प्रदर्शित किया गया। रोगों के उपचार में यूनानी चिकित्सा का योगदान और स्वस्थ जीवन के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने की धारणा के साथ आगंतुकों को यूनानी चिकित्सा साहित्य और कुछ जटिल एवं सामान्य रोगों की सफल उपचार गाथा निःशुल्क वितरित की गईं। रोगी आगंतुकों को निःशुल्क यूनानी उपचार और परामर्श देने के लिए परिषद के चिकित्सकों ने भी सेवायें दीं। परिषद के शोधकर्त्ताओं द्वारा विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर व्याख्यान भी दिए गए।

फरीदकोट में आरोग्य

फरीदकोट में आरोग्य मेले का उद्घाटन श्री सुरजीत कुमार ज्याणी, स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्री, पंजाब सरकार ने किया। डॉ. (श्रीमती) नवजोत कौर सिद्धु, मुख्य संसदीय सचिव; डॉ. राकेश शर्मा, निदेशक, आयुर्वेद; डॉ. रमेश कुमार शारदा, विभागाध्यक्ष, होमियोपैथी; श्री हुसनलाल, मिशन निदेशक, एन.आर. एच.एम. और स्थानीय विद्यायक श्री दीप मल्होत्रा सहित राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के कई अधिकारियों ने उद्घाटन समारोह में मंच साझा किया।

श्री सुरजीत कुमार जियानी ने स्वास्थ्य

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), भारत सरकार (बाएं से दूसरे) 6 फरवरी को रायपुर में दीप प्रज्वलित आरोग्य मेले का उद्घाटन करते हुए। श्री नाईक के दाएं डा. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ और बाएं श्री अमर अग्रवाल, राज्य स्वास्थ्य मंत्री हैं।

संरक्षण में पारंपरिक चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डाला और इसके उपयोग पर बल दिया। श्रीमती नवजोत कौर सिद्धु ने विभिन्न रोगों के निवारण हेतु घरेलू नुस्खों जैसे– पुदीने की चटनी, हल्वा, ज़ीरा, हल्दी इत्यादि की महत्वता पर प्रकाश डाला।

ज़ीरा में आरोग्य

पंजाब के ज़ीरा में श्री सुरजीत कुमार ज्याणी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब सरकार और श्री कपिल शर्मा, भाजपा प्रधान ने आरोग्य मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर राज्य स्वास्थ्य विभाग के कई अधिकारी उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में श्री ज्याणी ने स्वास्थ्य संरक्षण में पारंपरिक चिकित्सा की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होनें स्वास्थ्य पर जंक फूड के हानिकारक प्रभाव और आधुनिक जीवन शैली के बारे में भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री कपिल शर्मा ने एक छोटे नगर ज़ीरा में आरोग्य प्रदर्शनी के आयोजन के लिए आभार प्रकट किया।

गांधीनगर में आरोग्य

यह आरोग्य मेला 7–13 जनवरी को प्रदर्शन केन्द्र, गांधीनगर, गुजरात में गुजरात सरकार द्वारा आयोजित 'द वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो 2015' के साथ आयोजित किया गया। प्रदर्शन केन्द्र का हॉल नम्बर 4 व 4ए आरोग्य एक्सपो और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी कंपनियों के लिए आरक्षित थे। स्वास्थ्य सेवाओं और उत्पादों के लिए आरक्षित पवैलियन को आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

क्योंकि गुजरात 13वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन और प्रदर्शनी का सहभागी राज्य रहा इसलिए 7वें वाइबरेन्ट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो के समवर्ती इस बड़े कार्यक्रम का आयोजन गांधी नगर में किया गया।

समारोह का उद्घाटन गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल और श्रीमती सुषमा स्वराज, विदेश मंत्री, भारत सरकार ने संयुक्त रूप से किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 8 जनवरी 2015 को सभी प्रदर्शनी का दौरा किया।

गुवाहाटी में आरोग्य

गुवाहाटी में हुए राष्ट्रीय आरोग्य मेले का उद्घाटन श्री निलंजन सान्याल, सचिव (आयुष), भारत सरकार ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होनें कहा कि पारंपरिक चिकित्सा पद्धति जीवन शैली से जुड़े सभी रोगों के उपचार में आधुनिक चिकित्सा की मदद कर सकती है। श्री मनीश ठाकुर, आयुक्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, असम सरकार ने सबका स्वागत किया, जबकि श्री राजीव सिंह, महानिदेशक, इण्डियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स, कलकत्ता ने धन्यवाद प्रकट किया। श्री परथा ज्योति गोगोई, क्षेत्रीय निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार और प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. और सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई।

रायपुर में आरोग्य

डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ और श्रीपद यस्सो नायक, केन्द्रीय मंत्री, आयुष विभाग (स्वतंत्र प्रभार) ने आरोग्य मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री अमर अग्रवाल, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री, श्री रमेश बेस, स्थानीय सांसद, श्री अनिल कुमार गनेरीवाला, संयुक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार भी उपस्थित थे।

माननीय मुख्यमंत्री ने आयुष परिषदों के सभी मंडपों का दौरा किया। उन्होने

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद के मण्डप में परिषद के अधिकारियों ने उनका सहृदय स्वागत किया।

जयपुर में आरोग्य

श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया, मुख्यमंत्री, राजस्थान ने जयपुर में हुए आरोग्य मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होनें कहा कि इस समय पूरा विश्व आयुष पद्धतियों की शक्ति को पहचान रहा है। यह हमारे लिए स्वर्णिम अवसर है कि भारत और राजस्थान आयुष पद्धतियों को बढ़ावा देकर स्वंय को चिकित्सीय केन्द्र के रूप में स्थापित करें।

इस अवसर पर उपस्थित श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष मंत्री ने कहा कि हम आयुष चिकित्सकों को बढ़ावा देकर उनको प्रोत्साहित कर आयुष प्रणाली को स्वास्थ्य क्षेत्र में नेतृत्व के योग्य बना सकते हैं।

पन्चकुला में आरोग्य

पन्चकुला में आरोग्य मेले का उद्घाटन श्री अनिल विज, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री द्वारा किया गया। श्री गुलशन अहुजा, (आई.एफ.एस.), महानिदेशक, आयुष विभाग, हरियाणा सरकार, श्री जुबीन ईरानी, अध्यक्ष, कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ इण्डियन इन्डस्ट्रीज़, उत्तरी क्षेत्र, श्री ज्ञान चन्द गुप्ता, विधायक, पंचकुला ने उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई।

चार दिवसीय आरोग्य मेले के शुभारम्भ के दौरान श्री अनिल विज ने कहा कि 'जहां एलोपैथी पद्धति सिर्फ रोगों का उपचार करती है वहीं आयुष पद्धति में व्यक्ति का उपचार होता है' इसलिए राज्य सरकार सक्रिय रूप से प्रदेश में आयुष को बढ़ावा देना चाहती है। अतः इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमने राज्य के प्रत्येक सरकारी अस्पताल में एक आयुष विंग खोलने का निर्णय लिया है।

उन्होंने यह भी बताया कि कुरूक्षेत्र आयुर्वेदिक कॉलेज, हरियाणा को शीघ्र ही आयुष विश्वविद्यालय में परिवर्तित किया जाएगा। लोग बड़ी संख्या में मेले की ओर आकर्षित हुए और यह आयोजन बहुत सफल रहा।

भुवनेश्वर में आरोग्य

श्री नवीन पटनायक, मुख्यमंत्री, ओडिशा द्वारा भुवनेश्वर में आरोग्य मेले का उद्घाटन किया गया। अपने भाषण में, श्री पटनायक ने कहा कि स्थानीय स्वास्थ्य परम्परा का पुनरूद्धार और आयुष का स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली के साथ एकीकरण आम जनता हेतु बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रावधान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस अवसर पर उपस्थित, श्री श्रीपाद यस्सो नाईक, आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने कहा कि भारत ने विदेश में आयुष को प्रगतिशील बनाने और चिकित्सा पद्ध तियों के अनुसंधान और प्रसार में एक अग्रणी देश के रूप में खुद को प्रतिस्थापित करने के लिए अनेक देशों के साथ द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

• *नियाज़*

102वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में भागीदारी

परिषद के क्षेत्रीय यूनानी रिसर्च अनुसंधान मुम्बई ने 3–7 जनवरी को आयोजित 102वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस में भागीदारी की। इन्डियन सांइस कांग्रेस एसोसिएशन के इस कार्यक्रम का आयोजन मुम्बई विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। मानव विकास हेतु विज्ञान एवं तकनीक विषय पर आधारित कांग्रेस का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया।

कांग्रेस में संस्कृत द्वारा प्राचीन विज्ञान, एन्सेन्ट इन्डियन एविएशन टैक्नोलॉजी, बायोडाइवर्सिटी–कन्ज़र्वेशन, स्पेस एप्लीकेशन, क्लीन एनर्जी सिस्टम और अन्य विषय चर्चा में रहे। इसके अतिरिक्ति बाल विज्ञान कांग्रेस, महिला विज्ञान कांग्रेस और विज्ञान प्रदर्शनी दि पराइड ऑफ़ इन्डिया एक्सपो भी आयोजित किए गए।

क्षे.यू.चि.अ.सं. मुम्बई ने एम.एम.आर.डी.ए. मैदान में आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया जहाँ पर के.यू.चि.अ.प. की अनुबंधनात्मक गतिविधियों, उपलब्धियों और पब्लिकेशन्स को प्रदर्शित किया गया। आगंतुकों को यूनानी चिकित्सा द्वारा रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य सुधार पर अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू व मराठी भाषा में निःशुल्क साहित्य वितरण किया गया। यूनानी चिकित्सा में इच्छुक लोगों को परिषद के चिकित्सकों द्वारा मार्गदर्शन किया गया।

• *रिपोर्ट: नियाज़*
इनपुट: क्षे.यू.चि.अ.पर., मुम्बई

यूनानी भेषजकोशीय मिश्रणों का नैदानिक वैधीकरण

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) ने हाल ही में अपने विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों पर आठ रोगों में 17 यूनानी भेषजकोशीय मिश्रणों की सुरक्षा और प्रभावकारिता का वैधीकरण करने हेतु आठ बहु–केन्द्रिक नैदानिक अध्ययनों को सम्पन्न किया। 16 अनुसंधान केन्द्रों पर चलाए गए इन अध्ययनों ने दर्शाया कि ये मिश्रण विशिष्ट रोगों के उपचार में सुरक्षित और प्रभावशाली थे।

पहला वैधीकरण अध्ययन यूनानी औषधि – शर्बत–ए–फौलाद का सु–उल क़िनया (रक्तहीनता) के 251 रोगियों पर केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (के.यू.चि.अ.सं.), लखनऊ, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), अलीगढ़ और नई दिल्ली में किया गया।

दूसरा वैधीकरण अध्ययन यूनानी औषधि–जवारिश–ए–आमला और हब्ब–ए–पपीता का कसरत–ए–रुतबत–ए–हमूज़ी के 303 रोगियों पर क्षे.यू.चि.अ.सं., श्रीनगर, अलीगढ़ और पटना में किया गया।

तीसरा वैधीरकण अध्ययन चार यूनानी औषधियों– हब्ब–ए–रसौत, हब्ब–ए–मुक़िल, माजून–ए–मुक़िल और मरहम सईदा चोब नीमवाला का बवासीर दामिया के 189 रोगियों पर क्षे.यू.चि.अ.सं., नई दिल्ली, भद्रक, कोलकाता और नैदानिक अनुसंधान एकक (नै.अ.ए.), कुरनूल में किया गया।

चौथा वैधीकरण अध्ययन दो यूनानी औषधियों माजून–ए–उश्बा और अर्क़–ए–मुरक्कब मुसफ्फी–ए–खून की सुरक्षा और प्रभावकारिता को मूल्याकिंत करने के लिए क्षे.यू.चि.अ.सं., भद्रक, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (क्षे.अ.के.), इलाहाबाद, नै.अ.ए., बेंगलुरु और बुरहानपुर में बसूरुल जिल्द के 362 रोगियों पर किया गया।

पांचवा वैधीकरण अध्ययन तीन यूनानी औषधियों–सफूफ़–ए–मुग़ल्लिज़–ए–मनी, माजून–ए–आरद खुर्मा और हब्ब–ए–इक्कसीर शिफ़ा से संबन्धित था जिसको क्षे.अ.के., इलाहाबाद, नै.अ.ए., बुरहानपुर और मेरठ में सुरअत–ए–इन्ज़ाल (प्रिमैच्योर इजेक्युलेशन) के 420 रोगियों पर किया गया।

छठा वैधीकरण अध्ययन तीन यूनानी औषधियों माजून–ए–सूरंजान, सफूफ–ए–सूरंजान और रोगन–ए–सूरंजान का वजा–उल–मफ़ासिल के 303 रोगियों पर के.यू.चि.अ.सं., लखनऊ, क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई और पटना, नै.अ.ए., बेंगलुरु और केरल में किया गया।

सातवां वैधीकरण अध्ययन यूनानी औषधि तिरयाक़–ए–पेचिश के मूल्यांकन जांच हेतु क्षे.यू.चि.अ.सं., नई दिल्ली और नै.अ.ए., मेरठ में ज़हीर (पेचिश) के 111 रोगियों पर किया गया।

आठवां वैधीकरण अध्ययन यूनानी औषधि माजून–ए–निसयान का के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद, क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई और मुम्बई में निसयान के 201 रोगियों पर किया गया।

इन सभी अध्ययनों के परिणामों से ज्ञात हुआ कि ये औषधियां सम्बन्धित रोगों के उपचार में प्रभावशाली, उचित प्रकार से सहनीय और नैदानिक तौर पर हानिरहित थीं।

• *रिपोर्टः नियाज़*
इनपुटः क़मरुद्दीन

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *वर्ष में छः बार प्रकाशित होता है। जनवरी 2014 से यह सिर्फ अंग्रेज़ी की बजाय हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ़्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं।* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *में प्रकाशित सामग्री को* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।*

महानिदेशक व मुख्य संपादकः
प्रो. रईस–उर–रहमान

कार्यकारी संपादकः
मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समितिः
खालिद एम. सिद्दीक़ी
ज़कीउद्दीन
सलीम सिद्दीक़ी
शाइस्ता उरूज

संपादकीय कार्यालयः
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
61–65, इंस्टीटयूशनल एरिया, समुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

दूरभाषः +91–11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
फैक्सः +91–11/28522965
ई–मेलः unanimedicine@gmail.com
वेबसाइटः www.ccrum.net

मुद्रणः रैक्मो प्रैस प्रा. लि.
सी–59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1
नई दिल्ली–110020

ISSN 0974 1666

CCRUM newsletter

A Bi-monthly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 35 • Number 1 January–February 2015

Prof. Rais-ur-Rahman is new DG of CCRUM

Prof. Rais-ur-Rahman, Adviser (Unani), Ministry of AYUSH, Government of India took additional charge of Director General (DG), Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) on January 31, 2015. He replaced Prof. S. Shakir Jamil who attained the age of superannuation in the Council after serving over four years. Prof. Rais-ur-Rahman is a renowned Unani physician and brings with him about three decades of teaching and administrative experience.

Prof. Rais-ur-Rahman has a broad vision on globalization of Unani Medicine. During his first interaction as DG with the Officials of the Council on February 2, he said that our goal for the next five years should be to take Unani System of Medicine to new and respectable heights. He is very much acquainted with the research programmes and overall functioning of the CCRUM. He has long association with the CCRUM and has been engaged in its research activities in different capacities. He has been Technical Member of Standing Finance Committee (SFC) and Member of Scientific Advisory Committee (SAC) of the Council.

A Doctor of Medicine (M.D.) (Unani) from Ayurvedic & Unani Tibbia College (AUTC), University of Delhi, Prof. Rais-ur-Rahman has served as Head, Postgraduate Department of Moalajat wa Ilmul Amraz (Medicine & Pathology) at the same College during 2006–2013. Later, he was appointed

Prof. Rais-ur-Rahman

Adviser (Unani) to the Government of India on 15 February 2013 in the then Department of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare.

Prof. Rais-ur-Rahman joined service as Demonstrator (Moalajat) at Hamdard Tibbi College, New Delhi in February 1988. In May 1988, he joined the Department of Moalajat wa Ilmul Amraz, AUTC, New Delhi as Demonstrator. In 1992, he was promoted as Lecturer (Moalajat), and in 1996 as Reader. He became Professor in 2011. Prof. Rais-ur-Rahman has also worked as Assistant Medical Superintendent during 1998 and 2002, and Deputy Medical Superintendent during 1996 and 1998 at AUTC hospital, New Delhi.

Prof. Rais-ur-Rahman has been on selection committees and boards of studies of different academic institutions of Unani Medicine. Also, he has been on staff selection panels of Public Service Commissions of Jammu & Kashmir and Uttar Pradesh.

Prof. Rais-ur-Rahman has chaired technical sessions, delivered lectures, and presented research papers at various national and international training workshops, seminars and conferences on Unani Medicine and other health-related subjects. He has supervised five M.D. (Unani) theses, and published many research papers. He is also on the Editorial Boards of different research journals of Unani Medicine, besides being on the

panels of experts of different media channels.

The CCRUM welcomes Prof. Raisur-Rahman as its new DG and looks forward to his dynamic leadership for its all around development and better and faster development and progression of research in Unani System of Medicine. • ***Niyaz***

Health camp in Magh Mela 2015

The Council's Regional Research Centre based in Allahabad organised an extensive health camp-cum-exhibition from 10 January to 17 February at Sangam, Allahabad for the pilgrims of Magh Mela 2015.

Dr. Zubair Ahmed Khan, Regional Research Centre, Allahabad attending to a patient at the health camp during Magh Mela 2015 in Allahabad.

The camp was organised in collaboration with Utthan Centre, an organisation for sustainable development and poverty alleviation. It was inaugurated by Dr. Deena Nath Tiwari, formerly Deputy Chairman, Planning Commission, Chhattisgarh. Dr. Mohammad Ahmad, Deputy Superintendent, State Unani Medical College, Allahabad and various other dignitaries from Unani fraternity and saints / sadhus were present during the inaugural function.

As much as 4,853 patients were treated by the Council's physicians deployed at the camp. Special lectures on various common and chronic diseases were also organised, besides free distribution of literature on intervention of Unani Medicine in prevention of disease and promotion of health. The research activities and achievements of the Council were also highlighted. • ***Zaki***

Participation in NACLIN 2014

The Council's library and information staff participated in the 17th National Convention on Knowledge, Library and Information Networking – NACLIN 2014 jointly organized by Developing Library Network (DELNET), New Delhi and French Institute of Pondicherry, Pondicherry during 9–11 December 2014 in Pondicherry.

Inaugurating the convention, Dr. APJ Abdul Kalam, former President of India said, 'great books ignite imagination, imagination leads to creativity, creativity blossoms thinking, thinking provides knowledge and knowledge makes you great'. He stressed that coming into contact with good books and possessing them was indeed an everlasting enrichment of life. He highlighted the need to add voice-enabled titles to the libraries so that the visually impaired people can benefit. He felt that every home should have a home library as it was greater than any other wealth.

Earlier, in his introductory remarks, Dr. HK Kaul, Director, DELNET, New Delhi said that the libraries across the globe had to pass through a great deal of transformation in this age in order to serve their users in the best possible manner.

The three-day convention was themed on *'From Building Collections to Making Connections: Transforming Libraries in the Knowledge Era'* and comprised eight Technical Sessions, Poster Presentations, Invited Talks, Product Presentations, Panel Discussion, etc. Mr. Syed Shuaib Ahmad and Mr. Masood uz Zafar Khan, both Library and Information Assistant at the CCRUM, participated in the event. • ***Niyaz with input from Shuaib***

Need to exploit AYUSH systems to control NCDs urged

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) organized a two-day 'National Seminar on the Role of Unani Medicine in Non-communicable Diseases' at India Islamic Cultural Centre, New Delhi during 14–15 January 2015. The Seminar urged the need to exploit the strengths and potentials of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH) systems to control and manage Non-communicable Diseases (NCDs).

The Seminar had a plenary session and 10 technical sessions, each on a specific theme, besides inaugural and valedictory sessions. As much as 58 research papers were presented and 11 invited talks were delivered. The Seminar proved to be an extensive platform for a total of 300 delegates comprising medical scientists, academicians, researchers and M.D. (Unani) scholars. Five important publications of the Council were also released on the occasion.

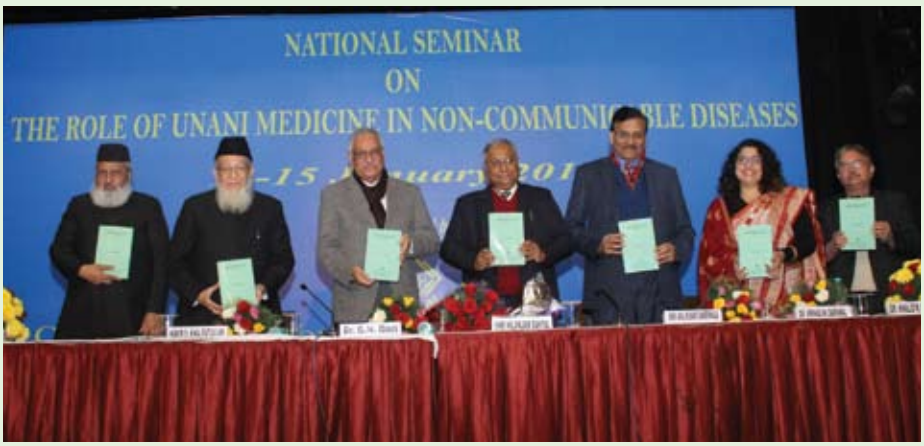

Mr. Nilanjan Sanyal (centre) and Mr. A.K. Ganeriawala (to his left) – Secretary and Joint Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India – along with (left to right) Prof. S. Shakir Jamil, Director General, CCRUM; Hakim Syed Khaleefathullah, Vice President (Technical), Governing Body of CCRUM; Dr. G.N. Qazi, Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi; Dr. Mrinalini Darswal, Special Secretary, Health & Family Welfare Department, Government of NCT of Delhi; and Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM releasing a publication of the CCRUM during the inaugural session of National Seminar on the Role of Unani Medicine in Non-communicable Diseases on January 14 in New Delhi.

Inaugural Session

The seminar was inaugurated by Mr. Nilanjan Sanyal, Secretary to the Government of India, Ministry of AYUSH. In his inaugural speech, Mr. Sanyal said that NCDs such as diabetes, cancer and cardiovascular diseases were the leading global cause of mortality and illness. The AYUSH systems had great potentials to contribute in controlling and managing the diseases and could establish their strengths at national and international levels. He laid emphasis on adopting the universally accepted scientific parameters in clinical studies so that our systems could get the due recognition.

Mr. Sanyal stressed on increasing the pace and volume of validation studies of pharmacopoeial drugs as well as traditional techniques. He also stressed on commercialisation of patented and efficacious drugs.

Mr. Sanyal further said that the Government of India was focusing on all-round growth of AYUSH systems and the Department of AYUSH had been accorded the status of a Ministry. The Government had also launched a National AYUSH Mission in order to promote these systems by providing cost-effective health services, strengthening educational systems, facilitating the enforcement of quality control and sustainable availability of drugs, he added.

Speaking on the occasion, Dr. G.N. Qazi, Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi who was the guest of honour for the seminar said that the pace of scientific validation of Unani Medicine should be expedited and volume of research in the system be

increased. He urged the researchers of Unani Medicine to scientifically validate various strengths of their system and essential drugs used therein to control NCDs.

Dr. Mrinalini Darswal (IAS), Special Secretary, Health & Family Welfare Department, Government of NCT of Delhi said that the researchers of AYUSH systems should re-verify the various concepts and treatments described in these systems and take the responsibility of advancing their systems through quality research.

Padma Shri Hakim Syed Khaleefathullah, an eminent Unani physician and Vice-President (Technical) of Governing Body of the CCRUM, highlighted the importance of Unani Medicine saying that it had a lot of time-tested and efficacious regimens for the successful treatment of a number of NCDs.

Earlier, in his welcome address, Prof. S. Shakir Jamil, Director General, CCRUM said that during the last three and a half decades, the Council had achieved some important landmarks in its various research programmes and emerged as the leading research institution of Unani Medicine. Under its clinical research programme, the Council conducted studies on 30 diseases including NCDs with special emphasis on the diseases of national health priorities. He added that the Council developed safe and cost-effective Unani treatment for vitiligo, eczema, psoriasis, scabies, bronchial asthma, chronic sinusitis, rheumatoid arthritis, osteoarthritis, infective hepatitis, malaria and filariasis

Mr. Nilanjan Sanyal, Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India addressing the inaugural session of National Seminar on the Role of Unani Medicine in Non-communicable Diseases on January 14 in New Delhi.

in addition to other diseases. He informed that the Council obtained eight patents and filed another 46 provisional patent applications.

He further said that the Council recently adopted Intramural Research (IMR) policy to expedite research activities. The Council entered into Memorandum of Understanding (MoU) and research collaboration with Indian Council of Medical Research (ICMR), New Delhi; National Institute of Research on Tuberculosis (NIRT), Chennai; Institute of Cytology and Preventive Oncology (ICPO), Noida; National AIDS Research Institute (NARI), Pune; Regional Medical Research Centre (ICMR), Port Blair; National Institute of Nutrition (NIN), Hyderabad; National Institute of Pharmaceutical Education and Research (NIPER), Hyderabad; and Faculty of Unani Medicine, Aligarh Muslim University, Aligarh, he added.

On infrastructure development front, Prof. Jamil informed that the Council constructed new buildings for its Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Lucknow and Regional Research Institutes of Unani Medicine (RRIUMs), Bhadrak and Patna, and started construction of a building for Regional Research Centre, Silchar. The Council also installed state-of-the-art research facilities at CRIUM, Hyderabad and RRIUM, Srinagar.

Five important publications of the Council namely *Standard Unani Treatment Guidelines, Volume – I, Kitāb al-Mi'a fi'l Tibb, Part – I, Medicinal Plants of Folklores of Odisha, Part – III, Muhīt-i-A'zam, Volume – III,* and *Standard Unani Medical Terminology* were released by Mr. Nilanjan Sanyal, Dr. G.N. Qazi, Mr. A.K. Ganeriwala, Joint Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India, Hakim Syed Khaleefathullah, and Dr. Mrinalini Darswal respectively.

At the end, Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM offered vote of thanks to the guests and the participants.

Plenary Session

The plenary session themed on *Recent Advances in Clinical Research on NCDs* was held after inaugural session on 14 January. It was chaired by Prof Y.K. Gupta, Head, Department of Pharmacology, All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), New Delhi and Prof. Sukhdev Swami Handa,

formerly Director, Indian Institute of Integrative Medicine – IIIM (CSIR), Jammu; Chairman, Pharmacopeia Commission of Indian Medicine (PCIM), and the rapporteur of this session was Dr. M.H. Kazmi, Assistant Director (Unani), CCRUM.

The session began with invited talk on *Pits and Problems in Clinical Research in Traditional System of Medicine* by Dr. Nandini K. Kumar, Former Deputy Director General, ICMR, New Delhi. Her talk comprised valuable information regarding safety of herbals in modern times, Good Manufacturing Practices for investigational products, problems related to drugs and their solutions, availability of raw materials and factors influencing quality of herbal drugs, vulnerable groups in clinical studies and various ethical issues.

Four research papers on various clinical studies on NCDs were presented by the delegates.

Technical Sessions

The first of the four technical sessions held on 14 January was themed on *Ilāj bi'l Tadbīr (Regimenal Therapy) in Non-communicable Diseases*. It was chaired by Prof. Syed Zillur Rehman, Ibn Sina Academy, Aligarh, Dr. M.A. Qasmi, Deputy Adviser (Unani), Ministry of AYUSH, New Delhi, and Prof. Tajuddin, Department of Saidla (Unani Pharmacy), Faculty of Unani Medicine, Ajmal Khan Tibbiya College (AKTC), Aligarh, and the rapporteur was Dr. M. Fazil Khan, Research Officer (Unani), CCRUM.

The session began with an invited talk delivered by Prof. K.M.Y. Amin, Department of Ilmul Advia, AKTC, Aligarh. He enlightened the audience with his deep knowledge on *the Distinctive Unani Approach to NCDs: Interventions and Research Initiatives*. He laid emphasis on the line of development of treatment in Unani Medicine, inclusion of Unani parameters in designing the clinical trial protocols, use of therapeutic end-points preferably in place of surrogate end-points, use of whole crude drug, and importance of assessment of quality of life and *Mizāj* (temperament) in clinical studies. In this session, six delegates presented their papers on the theme.

The second session held in parallel to the first one was themed on *Role of Unani Medicine in Lifestyle Diseases*. It was chaired by Prof. M.A. Siddiqui, Director, National Institute of Unani Medicine (NIUM), Bengaluru, and Dr. Waseem Ahmad, Deputy Director, Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Lucknow. The rapporteur of this session was Dr. Zaki Ahmad Siddiqui, Research Officer (Unani), CCRUM.

The session had two invited talks delivered by Dr. Arun Mukherji, Director, UDAAN, New Delhi and Dr. Ahmed Kamal, Outstanding Scientist, Indian Institute of Chemical Technology (CSIR), Hyderabad. Dr. Mukherji spoke on *Current and Future Trends in Diabetes Mellitus* and explained the common problems of diabetics and focused on the most important risk factors in the causation of diabetes. Dr. Kamal delivered an impressive speech on *Natural products in drug development: Podophyllotoxin congeners as potential chemotherapeutics*. He explained the discovery and development of new drugs from natural products especially medicinal plants with the concept of modification up to molecule level. The session also accommodated four paper presentations on the theme.

The other two sessions of the day held in parallel were themed on *Exploration of Medicinal Plants used in NCDs* and *Standardization of Medicinal Plants used in NCDs*. One of them was chaired by Prof. Anis Ahmad Ansari, AKTC, Aligarh and Hakim L. Samiulla, Director, CRIUM, Hyderabad. The rapporteur of this session was Mr. Aminuddin, Research Officer (Botany), CCRUM. The other session was chaired by Dr. Rajeev Sharma, Director, and Dr. M.B. Shankar, Joint Director, Pharmacopoeial Laboratory for Indian Medicine & Homoeopathy (PLIM & H), Ghaziabad. The rapporteur of the session was Mr. Shamsul Arifin, Research Officer (Chemistry), CCRUM. In one of the sessions, Prof. Abdul Mannan, Department of Ilmul Advia, AKTC, Aligarh delivered an invited talk on *Unani Perspective of Migraine*. He described the aetiology, predisposing factors, clinical findings and treatment of *Shaqīqa* (Migraine) as per Unani classical literature. He also touched upon the moderation in *Asbāb Sitta Zarūriyya* (six essential factors) and *'Ilāj bi'l Ghidhā'* (Dietotherapy) for the management and prevention of *Shaqīqa* (Migraine). A total of 11

research papers were presented in the two sessions. Concluding his session, Dr. Rajeev Sharma informed the house about the importance and need of harmonization of quality standards in pharmacopeial monographs across Indian systems of medicine.

The next day's proceedings started with two parallel sessions themed on *Experimental Studies on NCDs* and *Intervention of Unani Medicine in Cardiovascular Diseases*. The first was chaired by Dr. Nandini K. Kumar and Dr. Asim Ali Khan, Associate Professor, Faculty of Medicine (Unani), Jamia Hamdard, New Delhi, and the rapporteur of this session was Dr. Misbahuddin Azhar, Research Officer (Unani), CCRUM. It began with an invited talk on *Cancer-A revisit to the Wisdom of Unani System of Medicine* delivered by Prof. M.A. Siddiqui, Director, NIUM, Bengaluru. He highlighted the concept of the ancient Unani physicians regarding Cancer. He quoted Buqrāt (Hippocrates) that cancer results from a humoral imbalance and excessive black bile (*Sawdā*). Jālinūs (Galen) was the first to deal with tumors, including cancer, in a systematic way. He extended Hippocrate's definition of cancer and classified it into three major types: *Onkoi* (lumps or masses), *Karkinomas* (non-ulcerating), and *Karkinos* (malignant ulcers). Besides this talk, five papers were presented in this session.

The other session was chaired by Dr. K.M.Y. Amin and the rapporteur of this session was Dr. Qamar Uddin, Research Officer (Unani), CCRUM. In this session Prof. Arunabha Ray, Head, Department of Pharmacology, Vallabhbhai Patel Chest Institute, Faculty of Medicine, University of Delhi delivered his invited talk on *Clinical and experimental studies with UNIM-352 in Bronchial Asthma*. He stated that a randomized, double blind, placebo-controlled, clinical study was conducted to evaluate the possible beneficial effects of UNIM-352, a polyherbal Unani formulation, in patients of bronchial asthma; and the data showed that the study drug was safe and effective in reducing the frequency of bronchial asthma attacks. In this session, four papers were presented on the theme.

The seventh and eighth technical sessions on *New Drug Development for NCDs and Unani Medicine* and *Oncology* and *Unani Medicine* commenced in parallel at 12:00 PM on 15 January. The first one was chaired by Prof. M.M. Wamiq Amin, Head, Department of Ilmul Amraz, Faculty of Unani Medicine, Aligarh Muslim University, Aligarh and Prof. Mohammad Idris, Head, Department of Ilmul Saidla, A & U Tibbia College, New Delhi. The rapporteur of this session was Dr. Bilal Ahmad, Research Officer (Unani), Literary Research Institute of Unani Medicine, New Delhi. The session began with an invited talk by Dr. Mushtaq Ahmad, Head, Unani Medicine Chair, University of Western Cape, South Africa. He focused his views on *Unani Perspective of Waja-ul-Mafasil (Rheumatoid Arthritis)*. In this session, six papers were presented.

Two different views of audience of the two-day National Seminar on the Role of Unani Medicine in Non-communicable Diseases organized by the Central Council for Research in Unani Medicine during 14–15 January at India Islamic Cultural Centre in New Delhi.

The eighth session had Prof. (Hakim) B.S. Usmani, Former Principal & Head, Department of Kulliyat, Dr. M.I.J Tibbiya College & Dr. A.R. Kalsekar Hospital, Mumbai as Chairman, and Dr. Ahmad Sayeed, Research Officer (Unani), CCRUM as the rapporteur. The session began with an invited talk presented by Dr. M.A. Waheed, Deputy Director, CRIUM, Hyderabad. He focused his views on *Emerging Trends in the Management of Metabolic Syndrome*. He highlighted the complications of diabetes and consequences of uncontrolled diabetes mellitus. He focused on the aetio-pathological factors, diagnostic criteria and evaluation of Metabolic Syndrome. He also pointed out the role of obesity, lipid, inflammatory biomarkers, and free radicals in the development of metabolic syndrome. In this session, six papers were presented on the theme.

The last two parallel sessions of the Seminar were themed on *Unani Medicine and Dermatology* and *NCDs in the light of the Classical Literature*. The first one was chaired by Prof. Neena Khanna, Department of Dermatology, AIIMS, New Delhi, and Dr. Abdul Wadud Khan, A & U Tibbia College, New Delhi, and the rapporteur of the session was Dr. Merajul Haque, Research Officer (Unani), CCRUM. Dr. Khanna also delivered an invited talk on *Comparative study of Unani coded medications vs PUVA sol in the treatment of moderate to severe psoriasis*. She touched upon the effects of coded Unani drugs in comparison

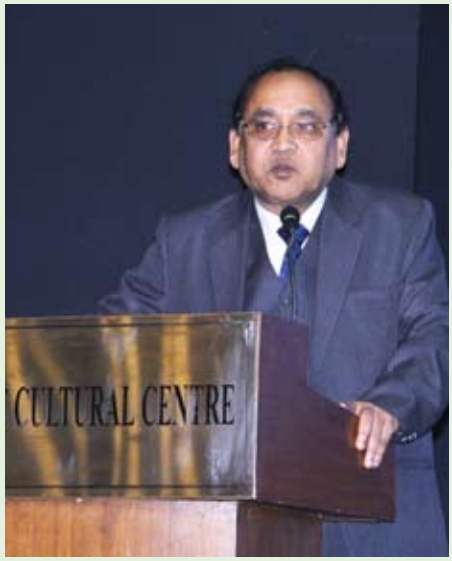

Prof. Rais-ur-Rahman, Adviser (Unani) Ministry of AYUSH, Government of India addressing the valedictory session of National Seminar on the Role of Unani Medicine in Non-communicable Diseases on January 15 in New Delhi.

to standard allopathic drug PUVA sol in cases of psoriasis. According to her presentation, Unani drugs were found significantly effective and safe. In this session, six papers were presented on the theme.

The tenth and last session was chaired by Prof. Khalid Zaman Khan, Department of Kulliyat, Faculty of Unani Medicine, Aligarh Muslim University, Aligarh, and the rapporteur of this session was Dr. Amanullah, Research Officer (Unani), CCRUM. The session began with an invited talk presented by Dr. Shariq Ali Khan, Research Officer In-Charge, Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Aligarh. He focused his views on *Management of Ziabetus Sukkari (Diabetes Mellitus Type II) in Unani Medicine – Advantages over the conservative therapies*. He described the various single Unani drugs which are useful in the management of Diabetes Mellitus. In this session, six papers were presented on the theme.

Valedictory Session

The valedictory session was chaired by Prof Y.K. Gupta, Head, Department of Pharmacology, AIIMS, New Delhi. The chief guest of the session was Prof. Rais-ur-Rahman, Adviser (Unani), Ministry of AYUSH, Government of India, New Delhi.

The session began with brief summary of the proceedings by Prof. S. Shakir Jamil. He summarised the presentations made in the technical sessions in addition to the deliberations of the Inaugural Session.

In his valedictory address, Prof. Y.K. Gupta stressed that we should identify the strength of Unani system of medicine and accordingly some diseases should be prioritized for research. He also laid emphasis on bringing out research papers and publications.

Prof. Rais-ur-Rahman gave a very dignified speech in which he pointed out that the seminar was a grand success. He congratulated the organizers for selecting a very contemporary theme for the seminar.

The session was concluded with Vote of Thanks proposed by Dr. M.A. Waheed, Deputy Director (Unani), CRIUM, Hyderabad.

• ***Niyaz with input from Qamar Uddin***

Prof. Anis Ansari honoured

Prof. Anis Ahmad Ansari was honoured with a Lifetime Achievement Award by Department of Ilmul Advia, Faculty of Unani Medicine, Aligarh Muslim University (AMU), Aligarh during its Second National Seminar on Relevance of Modern Methods of Studies in Unani Medicine held at Aligarh during 27–28 November 2014.

Prof. Anis Ahmad Ansari receiving Lifetime Achievement Award from (right to left) Prof. K.C. Singhal, Vice Chancellor, NIMS University, Jaipur and Dr. Firdaus Ahmad Wani, Registrar, Jamia Hamdard, New Delhi while Dr. Abdul Latif, AMU is giving him standing ovation during the National Seminar on Relevance of Modern Methods of Studies in Unani Medicine held during 27–28 November 2014 at Aligarh.

Prof. Ansari is a renowned Unani academician and well-known figure in the Unani fraternity. Before his retirement as Professor from Department of Kulliyat, Ajmal Khan Tibbiya College (AKTC), AMU, Aligarh on 31 May 2013, he has been Chairman, Department of Kulliyat (Basic Fundamentals of Unani System of Medicine), AKTC for three terms of three years each; Dean, Faculty of Unani Medicine, AMU, Aligarh for two years; and Principal, AKTC and Chief Medical Superindent, AKTC Hospital, for over four years. He has also been Director In-Charge of Central Council for Research in Unani Medicine during August 2002–October 2003, and Adviser (Unani), Department of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare, Government of India from December 2001 to November 2006.

The award has been conferred on him in recognition to the contribution extended by him to the development and advancement of education and research in Unani System of Medicine.

• ***Niyaz***

Hindi workshop at RRIUM, Mumbai

The Council's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Mumbai organised a day-long Hindi workshop on 28 January at Mumbai. The workshop was organised with an objective trained the officials of the Institute on how to use computer in Hindi and increase the use of the language in day-to-day work.

The workshop was inaugurated by Padma Shri Dr. TP Lahane, Dean, Grant Medical College and Sir JJ Group of Hospitals, Mumbai.

Speaking on the occasion, Mr. Damodar Gaur, Assistant Director, Department of Official Language, Ministry of Home Affairs elaborated on issues related to spelling, pronunciation and standardization of Hindi language. He also demonstrated on black board how to write Hindi words correctly.

Mr. Virbhadra Soni, Assistant Director, Department of Official Language, General Post Office, Mumbai spoke in detail on various issues related to the use of computer for Hindi language and provided solutions to common difficulties in typing Hindi on computer. He also made Unicode software installed on all the computers and trained the officials as to how make its use for typing Hindi.

The workshop concluded with vote of thanks extended by Dr. Mohammad Raza, Deputy Director In-charge of the Institute. All the officers and staff of the Institute participated in the workshop.

• ***Niyaz with input from RRIUM, Mumbai***

Participation in *Arogya* fairs

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) recently participated in eight National and State-level *Arogya* fairs organised by the Ministry of AYUSH, Government of India in collaboration with State Governments and other stakeholders during 12–14 December 2014, 2–4 January, 7–13 January, 30 January–2 February, 6–9 February, 13–16 February, 20–23 February and 22–25 February 2015 in Faridkot (Punjab), Zeera (Punjab), Gandhinagar (Gujrat), Guwahati (Assam), Raipur (Chhattisgarh), Jaipur (Rajasthan), Panchkula (Haryana), and Bhubaneswar (Odisha) respectively.

Mr. Naveen Patnaik, Chief Minister of Odisha (left) and Mr. Shripad Yesso Naik, Minister of AYUSH (independent charge), Government of India during ribbon-cutting ceremony of the Arogya fair held at Bhubanewar during 22–25 February.

The fairs were organised to propagate Indian systems of medicine, highlight activities and achievements of the Councils of AYUSH in the area of research, provide free-of-cost diagnosis and treatment to the ailing visitors, and impart awareness about health, hygiene, and curative aspects of ill-health. The Arogya fairs attract international researchers, manufacturers and processors and people from all walks of life who evince a great interest in the traditional knowledge of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH) systems.

During all these Arogyas, the CCRUM showcased its progress in the research programmes namely clinical research, drug standardization, survey and cultivation of medicinal plants, and literary research. It also displayed posters and charts highlighting various concepts of Unani system of medicine. Besides, some important publications of the Council like Pharmacopoeia of Unani Medicine, National Formulary of Unani Medicine, Hippocratic Journal of Unani Medicine, Standard Unani Medical Terminology, and Standard Unani Treatment Guidelines were put on display. With a view to create awareness about healthy living and intervention of Unani Medicine in curing diseases and promoting health, free-of-cost literature on Unani Medicine and success stories on successful treatment of some chronic and common diseases were distributed among the visitors. The Council also deployed its physicians to provide free consultation and treatment to the ailing visitors seeking Unani treatment. Lectures on various health issues were also delivered by the Council's researchers.

Arogya at Faridkot

The Arogya at Faridkot was inaugurated by Mr. Surjit Kumar Jayani, Minister of Health & Family Welfare, Government of Punjab. Several officials from State Department of Health & Family Welfare including Dr. (Mrs.) Navjot Kaur Sidhu, Chief Parliamentary Secretary; Dr. Rakesh Sharma, Director of Ayurveda; Dr. Ramesh Kumar Sharda, Head of Department (Homeopathy); Mr. Hussan Lal, Mission Director, NRHM; and Local MLA Mr. Deep Malhotra shared the dais in the inaugural ceremony.

Mr. Jayani highlighted the importance of traditional medicine in health preservation and advocated for

Mr. Shripad Yesso Naik, Minister of AYUSH (independent charge), Government of India inaugurating the Arogya fair by lighting candle on February 6 at Raipur. To Mr. Naik's right is Dr. Raman Singh, Chief Minister of Chhattisgarh and to his left is Mr. Amar Agarwal, State Health Minister.

their use. He also spoke on the role of exercise in maintaining good health. Mrs. Navjot Kaur Sidhu highlighted the importance of homemade recipes and things like pudina chutney, halwa, zeera, haldi, etc. in prevention of various diseases.

Arogya at Zeera

The Arogya at Zeera, Punjab was inaugurated by Mr. Surjit Kumar Jayani, Minister of Health & Family Welfare, Government of Punjab and Mr. Kapil Sharma, BJP Pradhan. Various Officers from State Health Department were present on the occasion. In his inaugural speech, Mr. Jayani highlighted the importance of traditional medicine in health preservation. He also spoke about the bad effects of junk food and modern-day lifestyle on health. Mr. Kapil Sharma thanked the Ministry of AYUSH for organising the Arogya at a small town like Zeera.

Arogya at Gandhinagar

The Arogya was held as a part of 'The Vibrant Gujarat Global Trade Show 2015' organised by the Government of Gujrat during 7–13 January at the Exhibition Centre, Gandhinagar, Gujarat. Halls No. 4 & 4A of the Exhibition Centre were dedicated for Arogya Expo and leading companies dealing in public healthcare. The pavilion that showcased healthcare services and products was largely supported by Ministry of AYUSH, Government of India.

As Gujarat was the Partner State for the 13th Pravasi Bharatiya Divas Convention & Exhibition, the Mega Event was organised at Gandhinagar, concurrent to the 7th Vibrant Gujarat Global Trade Show 2015.

The main event was inaugurated jointly by Chief Minister of Gujarat Mrs. Anandiben Patel and Mrs. Sushma Swaraj, Union Minister for External Affairs, Government of India. Honourable Prime Minister of India, Mr. Narendra Modi visited the Mega Exhibition on 8th January 2015. During his visit, he ensured to visit maximum exhibition halls.

Arogya at Guwahati

The Guwahati National Arogya fair was inaugurated by Mr. Nilanjan Sanyal, Secretary (AYUSH), Government of India. In his inaugural speech, Mr. Sanyal said that traditional systems of medicine could complement the modern medicine in handling all forms of diseases, including lifestyle diseases. Mr. Manish Thakur, Commissioner, Health & Family Welfare, Government of Assam delivered welcome note, whereas Mr. Rajeev Singh, Director General, Indian Chamber of Commerce, Kolkata preposed vote of thanks. Mr. Partha Jyoti Gogoi, Regional Director – Health & Family Welfare, Government of India and Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM and Adviser (Unani), Ministry of AYUSH, Government of India also graced the inaugural function.

Arogya at Raipur

The Arogya at Raipur was inaugurated by Dr. Raman Singh, Chief Minister of Chhattisgarh and Mr. Shripad Yesso Naik, Union Minister of AYUSH (Independent charge).

Also present on the occasion were Mr. Amar Agarwal, State Minister of Health & Family Welfare, Mr. Ramesh Bais, Local Member of Parliament and Mr. Anil Kumar Ganeriwala, Joint Secretary, Ministry of AYUSH, Government of India.

The Honourable Chief Minister also inaugurated the health exhibition and visited all the stalls of AYUSH Councils. While visiting the pavilion of CCRUM, he was welcomed wholeheartedly by the Council's Officers.

Arogya at Jaipur

The event at Jaipur was inaugurated by Mrs. Vasundhara Raje, Chief Minister of Rajasthan. Speaking on the occasion she said that with the world having recognised the power of AYUSH, it was high time that India and Rajasthan should promote AYUSH capabilities and become the medical hub of the world.

Present on the occasion, Mr. Shripad Yesso Naik, Minister of AYUSH said that India could emerge as a leader in healthcare if we capitalise on the strengths of the AYUSH systems by promoting and supporting the AYUSH practitioners.

Arogya at Punchkula

The Arogya at Punchkula was inaugurated by Mr. Anil Vij, State Minister of Health & Family Welfare. Mr. Gulshan Ahuja, (IFS), Director General, Department of AYUSH, Govt. of Haryana, Mr. Zubin Irani, Chairman, Confederation of Indian Industry, Northern Region, Mr. Gian Chand Gupta, MLA, Punchkula graced the inaugural function.

"While the allopathy cures only the diseases, AYUSH cures the person himself, so our government wants to promote AYUSH in our state aggressively. Hence with this objective, we have decided to open an AYUSH wing in each of our government hospital", announced Mr. Anil Vij while inaugurating the four-day Arogya fair. He also said that the Kurukshetra Ayurvedic College, Haryana will be converted into AYUSH University shortly. The fair attracted huge crowd from the region and was a great success.

Arogya at Bhubaneswar

The Arogya at Bhubaneswar was inaugurated by Mr. Naveen Patnaik, Chief Minister of Odisha. In his speech, Mr. Patnaik said that revitalisation of local health tradition and integration of AYUSH with mainstream healthcare delivery system could play an important role in the provision of better health services to the masses.

Present on the occasion, Mr. Shripad Yesso Naik, Minister of AYUSH (independent charge) said that India had signed bilateral agreements with a number of countries to promote AYUSH on foreign soil and position itself as the leading country in research and practice of the medicine systems.

• Niyaz

Participation in 102nd Indian Science Congress

The Council's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Mumbai participated in the 102nd Indian Science Congress of Indian Science Congress Association (ISCA) hosted by the University of Mumbai during 3–7 January. The congress themed on Science and Technology for Human Development was inaugurated by Honourable Prime Minister Mr. Narendra Modi.

Ancient sciences through Sanskrit, Ancient Indian aviation technology, Biodiversity conservation, Space application, clean energy systems and other topics were discussed in the congress.

Besides, Children's Science Congress, Women's Science Congress and Science Exhibition *'The Pride of India Expo'* were also organised.

The RRIUM Mumbai participated in *The Pride of India Expo* held at MMRDA Ground where it showcased research activities, achievements and publications of the CCRUM. Free literature in English, Hindi, Marahthi and Urdu languages on prevention of disease and promotion of health through Unani Medicine were also distributed among the visitors. The physicians of the Council also attended to the visitors interested in Unani treatment.

• Niyaz with input from RRIUM, Mumbai

Clinical validation of Unani pharmacopoeial formulations

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) recently concluded eight multi-centric clinical studies to validate safety and efficacy of 17 Unani pharmacopoeial formulations in eight diseases. The studies that were carried out at 16 of its research centres showed that the formulations were safe and effective in the treatment of specific diseases.

The first study was of a Unani drug – *Sharbat-e-Faulad* conducted in 251 patients of *Sū'al-Qinya* (Anaemia) at Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Lucknow, Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Aligarh, and RRIUM, New Delhi.

The second study that was related to two Unani drugs – *Jawarish-e-Aamla* and *Habb-e-Papita* was conducted in 303 patients of *Kasrat-i-Rutūbat Hamūzi* (Hyperacidity) at RRIUM, Srinagr, RRIUM, Aligarh, and RRIUM, Patna.

The third study of four Unani drugs – *Habb-e-Rasaut, Habb-e-Muqil, Majoon-e-Muqil,* and *Marham Saeeda Chob Neemwala* was conducted in 189 patients of *Bawāsīr Dāmiya* (Piles) at RRIUM, New Delhi, RRIUM, Bhadrak, RRIUM, Kolkata, and Clinical Research Unit (CRU), Kurnool.

The fourth study was conducted in 362 patients of *Busūr al-Jild* (Skin Eruptions) to evaluate the safety and efficacy of two Unani drugs – *Majoon-e-Ushba* and *Arq-e-Murakkab Musaffi-e-Khoon* at RRIUM, Bhadrak, Regional Research Centre (RRC), Allahabad, CRU, Bengaluru, and CRU, Burhanpur.

The fifth study that was related to three Unani drugs – *Safoof-e-Mughalliz-e-Mani, Majoon-e-Arad Khurma,* and *Habb-e-Ikseer Shifa* was conducted in 420 patients of *Sur'at al-Inzāl* (Premature Ejaculation) at RRC, Allahabad, CRU, Burhanpur, and CRU, Meerut.

The sixth study pertaining to three Unani drugs – *Majoon-e-Suranjan, Safoof-e-Suranjan,* and *Raughan-e-Suranjan* was conducted in 303 patients of *Waja'al-Mafāsil* (Rheumatoid Arthritis) at CRIUM, Lucknow, RRIUM, Chennai, RRIUM, Patna, CRU, Bangalore, and CRU, Kerala.

The seventh study was conducted in 111 patients of *Zahīr* (Dysentery) at RRIUM, New Delhi, and CRU, Meerut to examine a Unani drug – *Tiryaq-e-Pechish*.

The eighth study of a Unani drug – *Majoon-e-Nisyan* was conducted in 201 patients of *Nisyān* (Amnesia) at CRIUM, Hyderabad, RRIUM, Chennai, and RRIUM, Mumbai.

The results of all these studies showed that the medicines were effective, well-tolerated and clinically safe in the management of respective diseases. • ***Niyaz and Qamar Uddin***

Registration No. 34691/80

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter *is published six times a year. Since January 2014 it is published bilingually in Hindi and English instead of being published in English only. It contains news chiefly about the work of Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is free of charge to individuals as well as organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the* CCRUM Newsletter *may be reproduced provided credit is given to the* CCRUM Newsletter *and provided such reproduction is not used for commercial purposes.*

Director General & Editor-in-Chief:
Prof. Rais-ur-Rahman

Executive Editor:
Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board:
Khalid M. Siddiqui
Zakiuddin
Salim Siddiqui
Shaista Urooj

Editorial Office:
CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE
61-65, Institutional Area, Opp. 'D' Block,
Janakpuri, New Delhi - 110 058 (India)

Telephone : +91-11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
Fax : +91-11/28522965
E-mail: unanimedicine@gmail.com
Website: www.ccrum.net

Printed at: Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020